मखािइल गोर्बाचेव और शीत युद्ध

प्रलिम्सि के लयि:

मखािइल गोर्बाचेव, सोवयित संघ की कम्युनस्टि पार्टी,ग्लासनोस्त और पेरेस्त्रोइका, वश्वि युद्ध, शीत युद्ध, वारसॉ संधि, सोवयित संघ, गुटनरिपेक्ष आंदोलन।

मेन्स के लयि:

शीत युद्ध और गुटनरिपेक्ष आंदोलन।

चर्चा में क्यों?

हाल ही में सोवयित संघ के अंतमि नेता **मखािइल गोर्बाचेव** का 91 वर्ष की आयु में नधिन हो गया।

मखािइल गोर्बाचेव का योगदान:

- **परचिय:**
  - एक युवानेता के रूप में मखािइल गोर्बाचेव **सोवयित संघ की कम्युनस्टि पार्टी में** शामलि हो गए, और स्टालनि की मृत्यु के बाद वे नकिता खुरुश्चेव के **स्टालनि के द्वारा लागू नीतयिों में सुधार के प्रबल समर्थक** बन गए।
  - उन्हें वर्ष 1970 में **स्टावरोपोल क्षेत्रीय समति** के प्रथम पार्टी सचवि के रूप में चुना गया था।
  - वर्ष 1985 में उन्हें **सोवयित संघ की कम्युनस्टि पार्टी के महासचवि** के रूप में, दूसरे शब्दों में सरकार के वास्तवकि शासक के रूप में चुना गया था।
- **उपलब्धयिाँ:**
  - **प्रमुख सुधार:**
    - इन्होंने **"ग्लासनोस्त"** और **"पेरेस्त्रोइका"** की नीतयिों की शुरुआत की, जसिने **भाषण तथा प्रेस की स्वतंत्रता** और अर्थव्यवस्था के आर्थकि वस्तिार में मदद की।
      - पेरेस्त्रोइका का अर्थ है **"पुनर्गठन"**, वशिष रूप से साम्यवादी अर्थव्यवस्था और राजनीतकि व्यवस्था का सोवयित अर्थव्यवस्था में बाज़ार अर्थव्यवस्था की कुछ वशिषताओं को शामलि करके। इसके परणािमस्वरूप**वत्तिीय नर्णिय लेने में वकिेंद्रीकरण** भी हुआ।
      - ग्लासनोस्त का अर्थ है- **"खुलापन"**, वशिष रूप से सूचनाओं के संदर्भ में पारदर्शता, इसी क्रम में सोवयित संघ का **लोकतंत्रीकरण** शुरू हुआ।
  - **शस्त्रों में कमी पर ज़ोर:**
    - उन्होंने दो वश्वि युद्ध के बाद से यूरोप को वभिाजति करने मुद्दों का समाधान करने और जर्मनी के एकीकरण के लयि संयुक्त राज्य अमेरकिा के साथ हथयिारों में कमी के लयि समझौते कर पश्चमिी शक्तयिों के साथ साझेदारी की।
      - द्वतिीय वश्वि युद्ध के बाद सोवयित संघ द्वारा स्वयं और उसके आश्रति पूर्वी एवं मध्य यूरोपीय सहयोगयिों को पश्चमि और अन्य गैर-कम्युनस्टि देशों के साथ मुक्त संपर्क का अभाव ही प्रमुख राजनीतकि, सैन्य और वैचारकि अवरोध था।
  - **शीत युद्ध की समाप्त:ि**
    - [शीत युद्ध] को समाप्त करने का श्रेय गोर्बाचेव को दयिा जाता है, जसिके परणािमस्वरूप अलग-अलग देशों के रूप में**सोवयित संघ का वघिटन** हुआ।
  - **नोबेल शांति पुरस्कार:**
    - अमेरकिा और सोवयित संघ के मध्य शीत युद्ध को समाप्त करने के उनके प्रयासों के लयि**उन्हें वर्ष 1990 में [नोबेल शांति पुरस्कार]** से सम्मानति कयिा गया था।
- **भारत के साथ तत्कालीन संबंध:**
  - गोर्बाचेव दो बार **वर्ष 1986 और वर्ष 1988** में भारत आए थे।
  - उनका उद्देश्य यूरोप में **अपने नरिस्त्रीकरण की पहल को एशयिा तक वस्तिारति** करना और भारतीय सहयोग को सुनशि्चति करना था।
  - सोवयित संघ के नेता के रूप में पदभार संभालने के बाद **गोर्बाचेव की गैर-वारसा संधि वाले देश** की यह पहली यात्रा थी।

- तत्कालीन प्रधानमंत्री **राजीव गांधी** ने गोर्बाचेव को **"शांति के धर्मयोद्धा" (Crusader for peace)** की उपाधि से सम्मानित किया किया था।
- यात्रा के दौरान [भारत की संसद](#) में उनके संबोधन को भारतीय और सोवियत मीडिया में अतिशयोक्तिपूर्ण कवरेज मिला और इसे **भारतीय कूटनीति के एक उच्च बिंदु के रूप** में देखा गया।

शीत युद्ध:

[//](#) 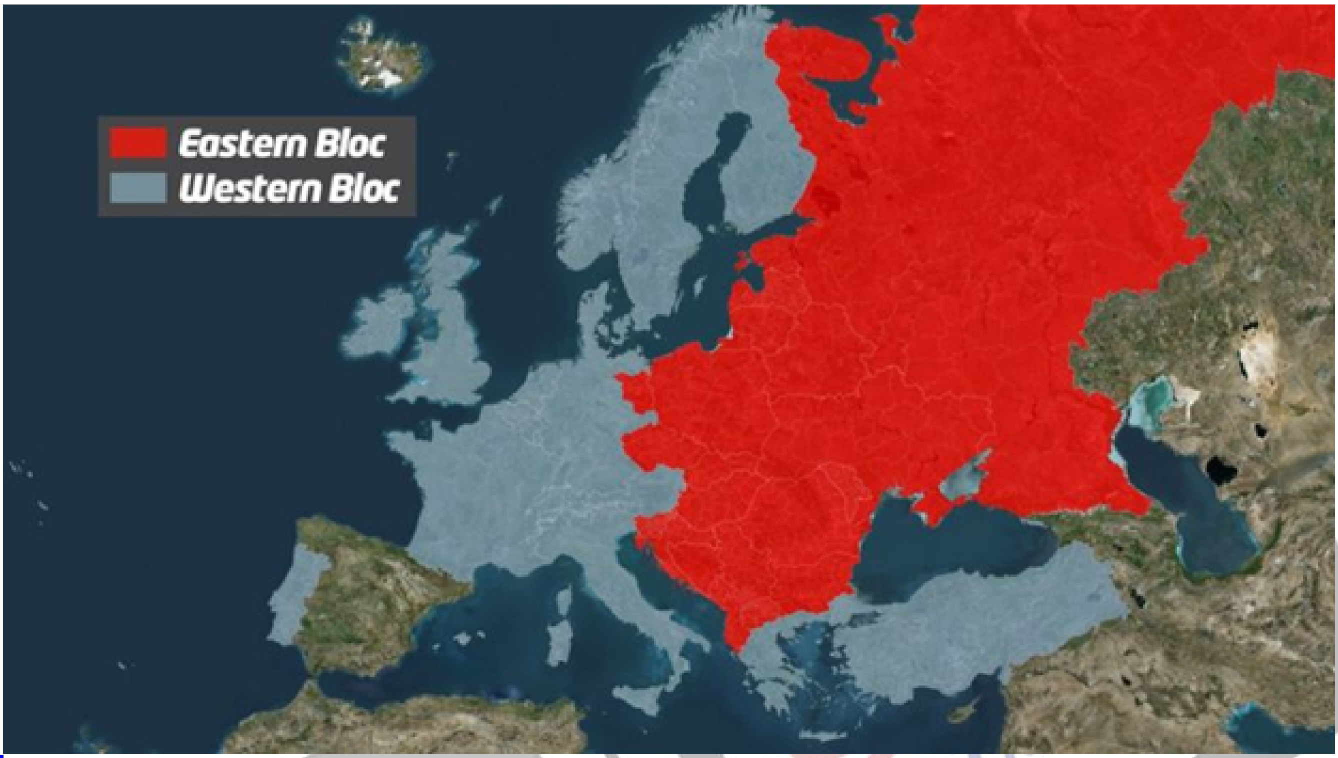

- **परिचय:**
  - शीत युद्ध द्वितीय विश्व युद्ध के बाद सोवियत संघ एवं उसके आश्रित देशों (पूर्वी यूरोपीय देश) और संयुक्त राज्य अमेरिका एवं उसके सहयोगी देशों (पश्चिमी यूरोपीय देश) के बीच **भू-राजनीतिक तनाव की अवधि (1945-1991)** को कहा जाता है।
  - द्वितीय विश्व युद्ध के बाद विश्व दो महाशक्तियों – सोवियत संघ और संयुक्त राज्य अमेरिका के वर्चस्व वाले दो शक्ति समूहों में विभाजित हो गया था।
    - यह पूंजीवादी संयुक्त राज्य अमेरिका और साम्यवादी सोवियत संघ के बीच वैचारिक युद्ध था जिसमें दोनों महाशक्तियाँ अपने-अपने समूह के देशों के साथ संलग्न थीं।
  - "शीत" (Cold) शब्द का उपयोग इसलिये किया जाता है क्योंकि दोनों पक्षों के बीच प्रत्यक्ष रूप से बड़े पैमाने पर कोई युद्ध नहीं हुआ था।
  - इस शब्द का पहली बार इस्तेमाल अंग्रेज़ी लेखक जॉर्ज ऑरवेल ने वर्ष 1945 में प्रकाशित अपने एक लेख में किया था।
  - शीत युद्ध सहयोगी देशों (Allied Countries), जिसमें अमेरिका के नेतृत्व में यू.के., फ्राँस आदि शामिल थे और सोवियत संघ एवं उसके आश्रित देशों (Satellite States) के बीच शुरू हुआ था।
- **भारत की भूमिका:**
  - **गुटनिरपेक्ष आंदोलन:**
    - [गुटनिरपेक्ष आंदोलन](#) की नीति ने औपचारिक रूप से खुद को संयुक्त राज्य या सोवियत संघ के साथ संरेखित करने की कोशिश नहीं की बल्कि स्वतंत्र या तटस्थ रहने की मांग की।
    - गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) की मूल अवधारणा वर्ष 1955 में इंडोनेशिया में आयोजित **एशिया-अफ्रीका बांडुंग सम्मेलन** में उत्पन्न हुई थी।
    - **पहला NAM शिखर सम्मेलन सितंबर 1961 में बेलग्रेड, यूगोस्लाविया में हुआ था।**
    - **उद्देश्य:**
      - साम्राज्यवाद, उपनिवेशवाद, नव-उपनिवेशवाद, नस्लवाद और विदेशी अधीनता के सभी रूपों के खिलाफ उनके संघर्ष में "गुटनिरपेक्ष देशों की राष्ट्रीय स्वतंत्रता, संप्रभुता, क्षेत्रीय अखंडता एवं सुरक्षा" सुनिश्चित करने के लिये वर्ष 1979 के हवाना घोषणा पत्र में संगठन का उद्देश्य तय किया गया था।
      - शीत युद्ध के दौर में गुटनिरपेक्ष आंदोलन ने विश्व व्यवस्था को स्थिर करने और शांति एवं सुरक्षा बनाए रखने में महत्त्वपूर्ण भूमिका निभाई।
  - **तटस्थ कदम:**
    - भारत महाशक्तियों के हितों की सेवा करने के बजाय अपने स्वयं के हितों की सेवा करते हुए अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर निर्णय लेने और रुख अपनाने में सक्षम था।

UPSC सिविल सेवा परीक्षा, विगत वर्षों के प्रश्न (PYQs)

प्रश्न 1: भारत के निम्नलिखित राष्ट्रपतियों में से कौन कुछ समय के लिये गुटनिरपेक्ष आंदोलन के महासचिव भी थे? (2009)

(a) डॉ. सर्वपल्ली राधाकृष्णन
(b) वराहगिरी वेंकटगिरी
(c) ज्ञानी जैल सिंह
(d) डॉ. शंकर दयाल शर्मा

उत्तर: (c)

- गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) का आरंभ औपनिवेशिक व्यवस्था के पतन और अफ्रीका, एशिया, लैटिन अमेरिका एवं विश्व के अन्य क्षेत्रों के लोगों के स्वतंत्रता संग्राम के दौरान हुआ था जब शीत युद्ध भी अपने चरम पर था।
- कुछ औपनिवेशिक गुलामी से आज़ाद देशों ने शीत युद्ध काल के दौरान द्वितीय विश्व युद्ध के बाद निर्मित हुए दो प्रमुख शक्ति ध्रुवों में से किसी में भी शामिल न होने का निर्णय लिया।
- बांडुंग सम्मेलन, 1955 के अंतिम प्रस्ताव ने गुटनिरपेक्ष आंदोलन (NAM) की नींव रखी।
- ज्ञानी जैल सिंह ने वर्ष 1983-86 तक NAM के अध्यक्ष के रूप में कार्य किया। वह नीलम संजीव रेड्डी के बाद NAM की अध्यक्षता करने वाले दूसरे भारतीय थे। **अतः विकल्प (c) सही है।**

प्रश्न. मलाया प्रायद्वीप में उपनिवेशन उन्मूलन प्रक्रम में सन्निहित क्या-क्या समस्याएँ थीं? (मेन्स-2017)

स्रोत: इंडियन एक्सप्रेस

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/mikhail-gorbachev-and-cold-war